

पूर्वोत्तर भारत में आजीविका सुरक्षा के लिए  
एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन  
रणनीतियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

Training Programme on Integrated  
Natural Resource Management  
Strategies for Livelihood Security in  
Northeast India



25<sup>th</sup> - 27<sup>th</sup> November 2025

Aijal Club, Aizawl, Mizoram



कृपया अपना संस्करण चुनें/ Please choose your version

हिन्दी संस्करण

English Version

Organized by:

I.C.F.R.E.-Bamboo & Rattan Centre, Aizawl, Mizoram  
(A unit of I.C.F.R.E.-R.F.R.I., Jorhat, Assam)

## संक्षिप्त विवरण

|                         |   |
|-------------------------|---|
| आयोजन का नाम            | पूर्वोत्तर भारत में आजीविका सुरक्षा के लिए एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन रणनीतियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम |
| तिथि                    | 25.11.2025 to 27.11.2025  |
| अवधि                    | 3 दिन   |
| कार्यक्रम का स्थान      | आइजल क्लब, आइजोल, मिजोरम  |
| प्रतिभागियों की संख्या  | 20  |
| भाग लेने वाली संस्था    | सरकारी अधिकारी, गैर सरकारी संगठन और पूर्वोत्तर राज्यों के प्रगतिशील किसान।                                  |
| आयोजन करने वाली संस्था  | भा.वा.अ.शि.प. – बांस एवं बेंत केंद्र, बेथलहम वेंगथलांग, आइजोल, मिजोरम                                       |
| अनुदान देने वाली संस्था | भा.वा.अ.शि.प. – उत्कृष्टता केंद्र (सतत भूमि प्रबंधन)<br>भा.वा.अ.शि.प., देहरादून                             |
| विशिष्ट अतिथि           | श्रीमती आरती चौधरी, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, मिजोरम सरकार        |
| सम्मानित अतिथि          | श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून                   |
| मुख्य अतिथि             | श्री ललथनसांगा, माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, मिजोरम सरकार                         |



## विस्तृत विवरण

**भा.वा.अ.शि.प. – बांस एवं बेंत केंद्र ने 25-27 नवंबर, 2025 तक आइजोल में "पूर्वोत्तर भारत में आजीविका सुरक्षा के लिए एकीकृत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन रणनीति" पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया।**

भा.वा.अ.शि.प. – उत्कृष्टता केंद्र (सतत भूमि प्रबंधन) भा.वा.अ.शि.प., देहरादून द्वारा प्रायोजित इस प्रशिक्षण में **20 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से 13 मिजोरम से और 7 अन्य पूर्वोत्तर राज्यों से थे।** मिजोरम के प्रतिभागियों ने विभिन्न विभागों और संगठनों का प्रतिनिधित्व किया, जिनमें शामिल हैं: कृषि, बागवानी, रेशम उत्पादन, आयुष, भूमि संसाधन, मृदा और जल संरक्षण, पशुपालन और पशु चिकित्सा, विज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार परिषद (MISTIC), राज्य औषधीय पादप बोर्ड, बांस विकास एजेंसी, मिजोरम विश्वविद्यालय और क्लोवर ऑर्गेनिक प्राइवेट लिमिटेड। अन्य पूर्वोत्तर राज्यों से भाग लेने वालों में कृषि विभाग (मेघालय), सामुदायिक पहल केंद्र (CCI, NGO, मणिपुर), नेस्ट लामका (गैर-सरकारी संगठन, मणिपुर), और साई एग्रो फॉरेस्ट्री प्राइवेट लिमिटेड (गैर-सरकारी कंपनी, त्रिपुरा) के प्रतिनिधि शामिल थे।

### दिवस-1 (25.11.2025):

**श्री संदीप यादव**, वैज्ञानिक-डी, प्रमुख, भा.वा.अ.शि.प. – बांस एवं बेंत केंद्र, आइजोल, मिजोरम ने सभी उपस्थित लोगों और सम्मानित अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। **डॉ. हंस राज**, वैज्ञानिक-ई, सीओई-एसएलएम, आईसीएफआरई, प्रशिक्षण समन्वयक ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला और अगले तीन दिनों में प्रशिक्षण के तहत विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। **डॉ. नितिन कुलकर्णी**, निदेशक, भा.वा.अ.शि.प.-आरएफआरआई, जोरहाट, असम ने प्राकृतिक संसाधनों का सावधानीपूर्वक अन्वेषण करने की आवश्यकता पर बल दिया, विशेष रूप से बढ़ती कमी को देखते हुए, और बिना और अधिक क्षय के उनके सतत उपयोग को सुनिश्चित करने पर। **श्रीमती आरती चौधरी**, आईएफएस, सीसीएफ, ईएफ एंड सीसी, मिजोरम सरकार ने विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया और सामाजिक विकास के लिए विज्ञान को मानव कौशल के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। **श्रीमती कंचन देवी**, आईएफएस, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून, ने सम्मानित अतिथि के रूप में भाग लिया, तथा पूर्वोत्तर भारत की समृद्ध जैव विविधता और स्थायी प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के महत्व पर जोर दिया। इस कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन, मुख्य अतिथि, मिजोरम सरकार के ईएफ एंड सीसी विभाग के **माननीय मंत्री श्री ललथनसांगा** ने किया, जिन्होंने प्रशिक्षण के आयोजन में भा.वा.अ.शि.प.-बीआरसी और भा.वा.अ.शि.प.-सीओई एसएलएम के प्रयासों की सराहना की और क्षेत्र में विभिन्न प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन प्रथाओं पर चर्चा की।

उद्घाटन सत्र का समापन आईसीएफआरई-बीआरसी के वैज्ञानिक-बी **श्री सुभप्रदा बेहरा** के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र के बाद, तकनीकी सत्र की शुरुआत **डॉ. हंस राज**, वैज्ञानिक ई, सीओई-एसएलएम द्वारा एक व्यावहारिक चर्चा के साथ हुई, जिसमें उन्होंने भारत में भूमि क्षरण की सीमा: चुनौतियां और अवसर विषय पर चर्चा की। उनके बाद **डॉ. अर्पित हरिया**, रिसर्च एसोसिएट, सीओई-एसएलएम ने भूमि क्षरण तटस्थता प्राप्त करने में उत्कृष्टता केंद्र की भूमिका पर प्रस्तुति दी।

दोपहर में, आईसीएआर-एनईएच क्षेत्र, कोलासिब के वरिष्ठ वैज्ञानिक **डॉ. लुंगमुआना** ने मिज़ोरम में फसल उत्पादकता को बनाए रखने के लिए मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन पर व्याख्यान दिया। इसके बाद, सीओई-एसएलएम के वैज्ञानिक ई **डॉ. गौरव मिश्रा** ने भूमि क्षरण की निगरानी के लिए यूएनसीसीडी ढांचे और इसके मुख्य संकेतकों पर चर्चा की। अंत में, पहले दिन का समापन आईसीएफआरई-बीआरसी, आइज़ोल के वैज्ञानिक डी **श्री संदीप यादव** की प्रस्तुति के साथ हुआ, जिन्होंने पूर्वोत्तर भारत के बाँस और रतन संसाधनों पर व्याख्यान दिया और उनके पारिस्थितिक और आर्थिक महत्व पर प्रकाश डाला।

### दिवस-2 (26.11.2025):

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन, सभी प्रतिभागियों और समन्वयकों के लिए एक क्षेत्रीय भ्रमण का आयोजन किया गया। टीम ने **ज़ोपार एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा संचालित ज़ोपार पलोरीकल्चर फ़ार्म** का दौरा किया, जहाँ श्री संतोष (क्षेत्र कार्यकर्ता) ने एंथुरियम, गुलाब, गुलदाउदी, जरबेरा, लिमोनियम, लिलियम, ऑर्किड और स्ट्रॉबेरी के प्रसार, खेती, कोल्ड स्टोरेज और पैकिंग सहित विभिन्न गतिविधियों की व्याख्या और प्रदर्शन किया। इसके बाद प्रतिभागियों ने **रीएक में हल्दी सोसाइटी** के साथ एक संवाद सत्र में भाग लिया और हल्दी सुखाने और प्रसंस्करण इकाई का दौरा किया। दोपहर में, समूह ने रीएक पहाड़ियों की यात्रा की, जो मिज़ोरम की एक मनोरम चोटियों में से एक है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध वनों के लिए प्रसिद्ध है।

### दिवस-3 (27.11.2025):

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का अंतिम दिन विशेषज्ञ प्रस्तुतियों की एक श्रृंखला के साथ शुरू हुआ। **डॉ. भरत सोमकुवर**, वैज्ञानिक सी, ब्रिक-आईएसबीडी, आइज़ोल ने समुदाय-संचालित संरक्षण: पूर्वोत्तर भारत में संसाधन प्रबंधन के लिए प्रथागत कानून और पारंपरिक ज्ञान पर बात की। इसके बाद मिज़ोरम सरकार की मत्स्य विस्तार अधिकारी **सुश्री लालबियांकगुरी** ने पहाड़ी धारा और तालाब पारिस्थितिकी तंत्र पर ध्यान केंद्रित करते हुए एकीकृत संसाधन प्रबंधन में मत्स्य पालन और जलीय कृषि पर एक व्याख्यान दिया।



**डॉ. बिप्लब ब्रह्मा**, वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, इंडो-जर्मन डेवलपमेंट कॉरपोरेशन, अगरतला ने सहभागी दृष्टिकोण-आधारित लैंडस्केप प्रबंधन और आजीविका विकास में इसके निहितार्थ पर प्रस्तुति दी। दोपहर में, **पीसी लालंघासंगी**, परियोजना अधिकारी, बागवानी विभाग, मिजोरम ने बाढ़ और सूखे के लचीलेपन पर ध्यान केंद्रित करते हुए पूर्वोत्तर में जलवायु अनुकूलन रणनीतियों पर एक आकर्षक चर्चा का नेतृत्व किया। अंतिम प्रस्तुति वानिकी विभाग के **प्रोफेसर ए. के. त्रिपाठी** ने दी, जिन्होंने पूर्वोत्तर भारत में जलवायु परिवर्तन और सतत विकास पर अंतर्दृष्टि साझा की।

तकनीकी प्रस्तुतियों के बाद समापन सत्र की शुरुआत हुई, जिसमें मिजोरम सरकार के आईएफएस, पीसीसीएफ **श्री राजीव कुमार तिवारी** ने अध्यक्ष के रूप में अध्यक्षता की। आईसीएफआरई-बीआरसी के प्रमुख श्री संदीप यादव ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान आयोजित गतिविधियों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। अपने समापन भाषण में, श्री राजीव कुमार तिवारी ने प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी और समर्पण की सराहना की। उन्होंने मिजोरम में सागौन के बागानों की स्थिति, पहाड़ी क्षेत्रों में मृदा नमी संरक्षण और पूर्वोत्तर की समृद्ध जैव विविधता जैसे प्रमुख पहलुओं पर प्रकाश डाला। प्रतिभागियों ने पीसीसीएफ के साथ बातचीत के दौरान अपनी प्रतिक्रिया और विचार भी साझा किए। सत्र का समापन मिजोरम सरकार के पीसीसीएफ श्री राजीव कुमार तिवारी द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण पूर्णता प्रमाण पत्र वितरित करने के साथ हुआ।

**संरक्षक**  
**डॉ. नितिन कुलकर्णी, निदेशक**  
**भा.वा.अ.शि.प. - वर्षा वन अनुसंधान संस्थान**  
**जोरहाट, असम**



“ जिस प्रकार अमेज़ॅन के जंगलों को दुनिया का फेफड़ा माना जाता है, उसी प्रकार पूर्वोत्तर भारत के जंगल हमारे देश के फेफड़ों के समान हैं। पूर्वोत्तर भारत में भूमि का क्षरण चिंताजनक दर से हो रहा है, जो कि पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील और नाजुक क्षेत्र है। ऐसे में, जन जागरूकता पैदा करने के लिए इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। ”

**विशिष्ट अतिथि**  
**श्रीमती आरती चौधरी, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक**  
**पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, मिजोरम सरकार**



“ सतत आजीविका, वानिकी और प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन एक वैज्ञानिक अनुशासन होने के साथ-साथ एक कला भी है। इनके प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विभिन्न हितधारकों, जिनमें सरकारी संगठन, निजी क्षेत्र की संस्थाएँ और गैर-सरकारी संगठन शामिल हैं, के सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता होती है, ताकि सतत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन प्रथाओं को व्यापक रूप से अपनाया जा सके। ”

**सम्मानित अतिथि**  
**श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से., महानिदेशक**  
**भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून**



“ पूर्वोत्तर भारत में कृषि और वानिकी आजीविका के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जबकि भूमि क्षरण पूरे देश में, इस क्षेत्र सहित, एक बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है। उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड में जल सहेलियों जैसी सफल पहलें, जिन्होंने भूजल पुनर्भरण में योगदान दिया है, सतत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के लिए वैज्ञानिक रूप से संचालित समाधानों की तत्काल आवश्यकता को उजागर करती हैं। ”



**मुख्य अतिथि**  
**श्री ललथनसांगा, माननीय मंत्री**  
**पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, मिजोरम सरकार**



“मैं पूर्वोत्तर राज्यों के हितधारकों के लिए मिजोरम में इस महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु देहरादून स्थित भा.वा.अ.शि.प. के सतत भूमि प्रबंधन उत्कृष्टता केंद्र और आइजोल स्थित भा.वा.अ.शि.प.-बांस एवं बेंत केंद्र को बधाई देता हूं। इस प्रकार की पहलों का उद्देश्य ठोस सामाजिक परिणाम प्राप्त करना होना चाहिए, जिसमें पूर्वोत्तर भारत में कृषि वानिकी, जैविक खेती, बागवानी और वानिकी जैसे क्षेत्रों के विकास के लिए सतत प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन को अपनाने पर विशेष बल दिया जाए।”

## पहले दिन की झलकियाँ



चित्र १: अ-ह: उद्घाटन सत्र की झलकियाँ



## दूसरे दिन की झलकियाँ



अ



ब



स



ड



इ



फ



ग



ह

चित्र २: अ-ह: क्षेत्र भ्रमण की झलकियाँ



## तीसरे दिन की झलकियाँ



अ



ब



स



ड



इ



फ



ग



ह

चित्र 3: अ-ड: तकनीकी सत्र की झलकियाँ; इ-ह: विदाई सत्र



# प्रिंट मीडिया कवरेज

## दिनांक: 26.11.2025

### अखबार: वर्थली, आइजोल

#### Ram Leilung hausakna venhimna Training

Nithum chhung awh tur, Ram leilung hausakna leh a awmsa venghim chung a eizawna kawng in kawh hmuh na tur training, Aijal Club ah ICFRE- Bamboo and Rattan Centre buatsaihin nimin khan tan a ni. He training ah hian Northeast state dang Manipur, Meghalaya leh Tripura atang a sawmbik te, Mizoram Sorkar hnuai



atanging Agriculture Dept, Bamboo Development Agency, AH &

Vety Dept, Soil and Conservation Dept, Directorate of Ayush, State Medicinal Plant Board, Sericulture Dept, Horticulture Dept atanging Group A officers te leh, Research Scholars, MZU leh NGO atanging Centre for Environment Protection leh Clover Organic Pvt. Ltd a tangin sawmbik te an tel a ni. He hun hi Minister zahawm tak Pu Lalthansanga, Hon'ble Minister, EF&CC chuan khuallian niin a hman pui a. Khuallian chuan ramngaw leilung hausakna kan tih chereu nasat tawh lai hian, a venghim zawng leh ti chereu belh lo zawng a eizawna tur kawng kan dap a pawimawh thu a sawi a. He training ah hian kan ram tan a thil tha paw chhuak thei ngei tur a thiamna hawn theuh turin kalkhawmte a chah a ni. Pi Arti Chaudhary, IFS, CCF, EF&CC Dept, Govt. of Mizoram chu he hunah hian khual zahawm niin, hetiang a training huap zau tak buatsaih a ni hi a lawmawm a tih thu sawi a. Kan ram leilung chereu zel tur veng tur hian Sorkar leh mipuite thawh ho na a that a pawimawh thu a sawi. Pu Sandeep Yadav, Scientist-D & Head, ICFRE-BRC in kalkhawmte lawman thu sawiin, Course Director, Dr. Hans Raj, Scientist-E, ICFRE-CoE(SLM) in training chungchang sawifiah na hun a hmang a. Indian Council of Forestry, Research and Education (ICFRE) Director General, Pi Kanchan Devi, IFS leh Dr. Nitin Kulkarni, Director, ICFRE-RFRI te chuan he training khuhhawmna hi online in an hman pui bawk. Technical session ah hian, mithiam hrang hrang ten thupui thlan bik hmang in zirtina an pe a ni.

# प्रिंट मीडिया कवरेज

## दिनांक: 26.11.2025

### अखबार: न्यूज़लिनक, आइजोल

## 3-day natural resource training begins in Aizawl

Staff Reporter

**Aizawl, Nov 25:** A three-day long training programme focusing on integrated natural resource management strategies for livelihood security in Northeast India commenced today at the Aijal Club. The event was organised by the ICFRE-Bamboo and Rattan Centre (ICFRE-BRC) Bethlehem Vengthlang, Aizawl.

The training featured invited participants from other North Eastern states (Manipur, Meghalaya, and Tripura), along with Group 'A' Officers from numerous Mizoram Government departments, including Agriculture, Horticulture, AH & Vety, Soil and Conservation, Ayush, Sericulture, and the State Medicinal Plant Board. Additionally, Research



Scholars from Mizoram University (MZU) and representatives from NGOs like the Centre for Environment Protection and Clover Organic Pvt. Ltd. participated.

Inauguration was graced by the Minister for Environment, Forests & Climate Change (EF&CC), Lal-thansanga, in his speech, the Minister emphasised the critical need to identify sustainable livelihood av-

enues that promote conservation and halt further degradation of the region's severely depleted forest and land resources. He urged participants to leverage the training to acquire knowledge beneficial to the state.

Arti Chaudhary, IFS, CCF, EF&CC Department, Govt. of Mizoram, served as the Guest of Honour. She commended the organization of this extensive training and

highlighted the necessity of strong collaboration between the government, the NGO's and the public to protect the state's natural environment from ongoing deterioration.

Sandeep Yadav, Scientist-D & Head, ICFRE-BRC, delivered the welcome address. Dr. Hans Raj, Scientist-E, ICFRE-CoE(SLM) and Course Director, provided an overview of the training curriculum. The function was also attended virtually by Kanchan Devi, IFS, Director General, ICFRE, and Dr. Nitin Kulkarni, Director, ICFRE-RFRI.

The programme features a Technical Session where various subject matter experts will deliver specialised instruction on predetermined topics.

# डिजिटल मीडिया कवरेज

दिनांक: 25.11.2025

मीडिया चैनल: ज़ोनेट समाचार, आइजोल

YouTube पर वीडियो देखने के लिए क्लिक करें (ब्राउज़र में खुलेगा)



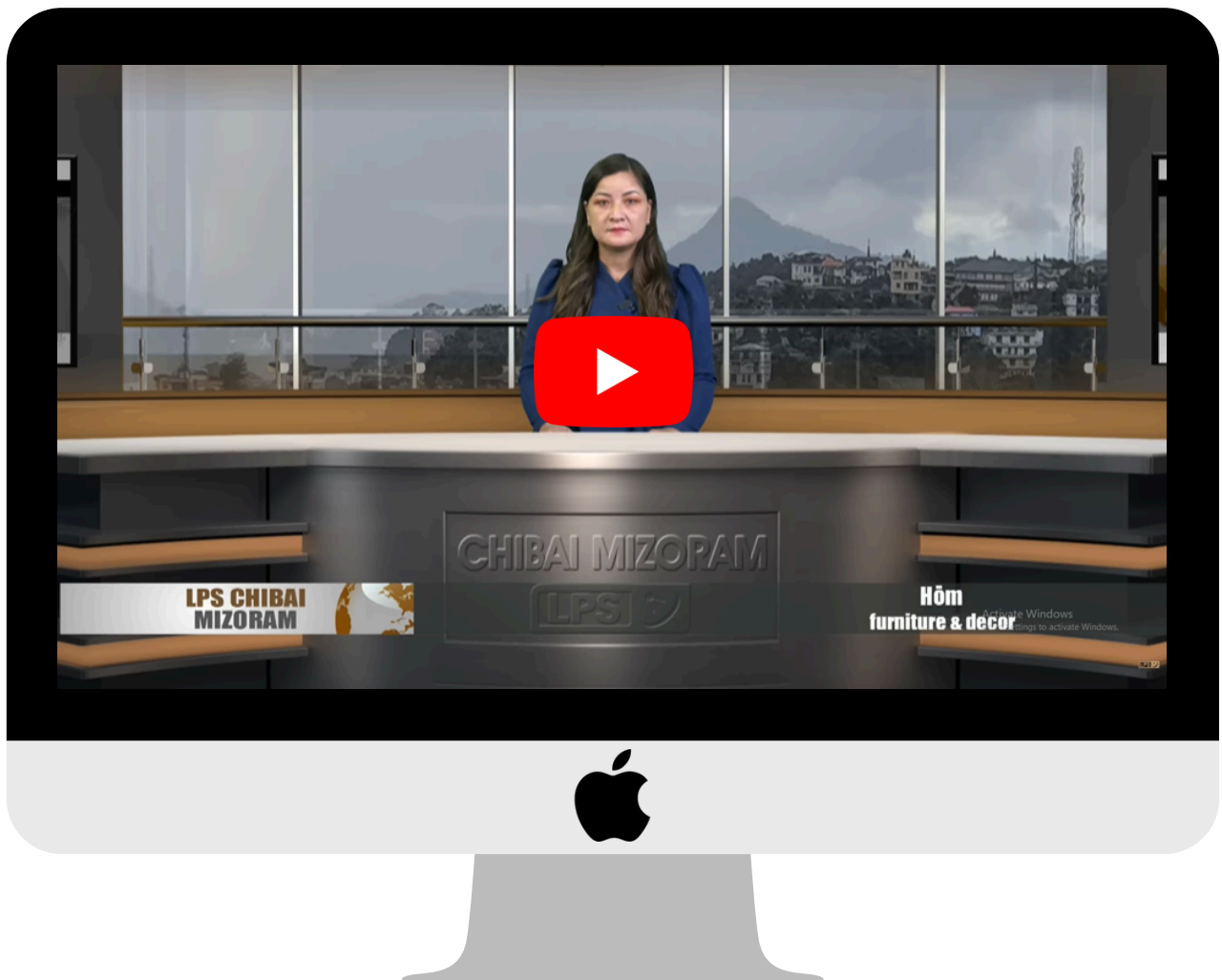


# डिजिटल मीडिया कवरेज

दिनांक: 26.11.2025

मीडिया चैनल: एलपीएस समाचार, आइजोल

YouTube पर वीडियो देखने के लिए क्लिक करें (ब्राउज़र में खुलेगा)



## Brief Summary

|                                |  |
|--------------------------------|--|
| <b>Name of Event</b>           | Training Programme on Integrated Natural Resource Management Strategies for Livelihood Security in Northeast India |
| <b>Date(s)</b>                 | 25.11.2025 to 27.11.2025   |
| <b>Duration</b>                | 03 Days  |
| <b>Venue</b>                   | Aijal Club, Aizawl, Mizoram  |
| <b>No. of Participants</b>     | 20   |
| <b>Participating Agency(s)</b> | Government officers, NGOs, progressive farmers from northeastern states, etc.                                      |
| <b>Organizing Agency(s)</b>    | ICFRE-Bamboo & Rattan Centre, Bethlehem Vengthlang, Aizawl, Mizoram  |
| <b>Funding Agency(s)</b>       | ICFRE-Centre of Excellence (Sustainable Land Management) ICFRE, Dehradun   |
| <b>Distinguished Guest</b>     | Smt. Arti Chaudhary, IFS, CCF, EF&CC, Government of Mizoram  |
| <b>Guest of Honour</b>         | Smt. Kanchan Devi, IFS, Director General, ICFRE, Dehradun  |
| <b>Chief Guest</b>             | Shri Lalthansanga, Hon'ble Minister, EF&CC Department, Government of Mizoram                                       |

## Detailed Description

The **ICFRE-Bamboo and Rattan Centre** successfully organized a three-day training workshop on **"Integrated Natural Resource Management Strategies for Livelihood Security in Northeast India"** in Aizawl from **25<sup>th</sup> to 27<sup>th</sup> November 2025**. Sponsored by the ICFRE Centre of Excellence (Sustainable Land Management), Dehradun, the training welcomed **20 participants, 13 from Mizoram and 7 from other northeastern states**. The participants from Mizoram represented various departments and organizations, including Agriculture, Horticulture, Sericulture, AYUSH, Land Resources, Soil & Water Conservation, Animal Husbandry & Veterinary, Science Technology & Innovation Council (MISTIC), State Medicinal Plant Board, Bamboo Development Agency, Mizoram University, and Clover Organic Pvt. Ltd. Those attending from other northeastern states included representatives from the Agriculture Department (Meghalaya), Centre for Community Initiative (CCI, NGO, Manipur), NEST LAMKA (NGO, Manipur), and SAI Agro Forestry Pvt. Ltd. (non-government company, Tripura).

### **DAY -1 (25.11.2025):**

**Shri. Sandeep Yadav**, Scientist-D, Head, ICFRE-Bamboo and Rattan Centre, Aizawl, Mizoram, gave a warm welcome to all attendees and esteemed guests. **Dr. Hans Raj**, Scientist-E, CoE-SLM, ICFRE, Training coordinator, highlighted the importance of this training programme and briefed about the various activities under the training over the next three days. **Dr. Nitin Kulkarni**, Director, ICFRE–Rain Forest Research Institute (RFRI), Jorhat, Assam, who joined via video conferencing, emphasized the need to explore natural resources carefully, especially in the face of increasing depletion, and to ensure their sustainable use without further exhaustion. **Smt. Arti Chaudhary**, IFS, CCF, EF&CC, Government of Mizoram, attended as the distinguished guest and highlighted the need to integrate science with human skills for societal development.

**Smt. Kanchan Devi, IFS**, DG, ICFRE, Dehradun, attended as the guest of honour, emphasised the rich biodiversity of Northeast India and the importance of sustainable natural resource management. The event was formally inaugurated by the Chief Guest, **Shri Lalthansanga, Hon'ble Minister**, EF&CC Department, Government of Mizoram, who appreciated the efforts of ICFRE-BRC and ICFRE–CoE SLM in organising the training and discussed various natural resource management practices in the region. The inaugural session was concluded with a Vote of Thanks by **Shri Subhaprada Behera**, Scientist-B, ICFRE-BRC.

After the inaugural session, the technical sessions began with an insightful discussion by **Dr. Hans Raj**, Scientist E, CoE–SLM, discussing the topic Extent of land degradation in India: Challenges and Opportunities. He was followed by **Dr. Arpit Huria**, Research Associate, CoE–SLM, then presented on the Role of the Centre of Excellence in achieving land degradation neutrality.

In the afternoon, **Dr. Lungmuana**, Senior Scientist, ICAR–NEH Region, Kolasib, spoke on Soil Health Management for Sustaining Crop Productivity in Mizoram. This was followed by **Dr. Gaurav Mishra**, Scientist E, CoE–SLM, who discussed about the UNCCD framework to monitor land degradation and its core indicators.

Finally, the first day concluded with a presentation by **Shri Sandeep Yadav**, Scientist D, ICFRE–BRC, Aizawl, who spoke on Bamboo and Rattan Resources of Northeast India, highlighting their ecological and economic significance.

## **DAY-2 (26.11.2025):**

On the second day of the training program, a field trip was organised for all participants and coordinators. The team visited the **Zopar Floriculture Farm operated by ZOPAR Exports Pvt. Ltd.**, where Sri Santhosh (Field Worker) explained and demonstrated various activities, including the propagation, cultivation, cold storage, and packing of anthurium, roses, chrysanthemum, gerbera, limonium, liliun, orchids, and strawberries.

Participants then attended an interactive session with the **Turmeric Society at Reiek** and visited the turmeric drying and processing unit. In the afternoon, the group trekked to Reiek Hills, one of Mizoram's scenic peaks known for its natural beauty and rich forests.

### **DAY-3 (27.11.2025):**

The final day of the three-day training workshop began with a series of expert presentations. **Dr. Bharat Somkuwar**, Scientist C, BRIC-ISBD, Aizawl, spoke on Community-Driven Conservation: Customary Laws and traditional knowledge for resource management in Northeast India. This was followed by **Ms. Lalbianknguri**, Fisheries Extension Officer, Government of Mizoram, who delivered a lecture on Fisheries and Aquaculture in Integrated Resource Management with a focus on hill stream and pond ecosystems. **Dr. Biplab Brahma**, Senior Technical Officer, Indo-German Development Corporation, Agartala, presented on Participatory Approach–Based Landscape Management and Its Implications in Livelihood Development. In the afternoon, **PC Lalnghahsangi**, Project Officer, Department of Horticulture, Mizoram, led an engaging discussion on Climate Adaptation Strategies in the Northeast, focusing on flood and drought resilience. The final presentation was delivered by **Prof. A. K. Tripathi**, Department of Forestry, who shared insights on Climate Change and Sustainable Development in Northeast India.

The valedictory session commenced after the technical presentations, with **Shri Rajeev Kumar Tiwari, IFS, PCCF**, Government of Mizoram, presiding as the Chairperson. Shri Sandeep Yadav, Head, ICFRE–BRC, presented a concise overview of the activities conducted during the three-day training program. In his valedictory address, Shri Rajeev Kumar Tiwari appreciated the participants for their active involvement and dedication. He highlighted key aspects such as the status of Teak plantations in Mizoram, soil moisture conservation in hill areas, and the biodiversity. The session concluded with the distribution of training completion certificates to all participants by Shri Rajeev Kumar Tiwari, PCCF, Government of Mizoram.



**Patron**  
**Dr Nitin Kulkarni, Director**  
**ICFRE - Rain Forest Research Institute, Jorhat,**  
**Assam**



“ Just as the Amazonian forests are regarded as the lungs of the world, the forests of Northeast India serve as the lungs of our country. Land degradation is occurring at an alarming rate in Northeast India, an area that is eco-sensitive and ecologically fragile. In this context, such training programs are essential for creating awareness among the masses. ”

**Distinguished Guest**  
**Smt. Arti Chaudhary, IFS,**  
**CCF, EF&CC, Government of Mizoram**



“Sustainable livelihoods, forestry, and the management of natural resources constitute both a scientific discipline and an art. Their effective implementation requires collaborative efforts among diverse stakeholders, including government organizations, private sector entities, and non-governmental organizations, to ensure the wider adoption of sustainable natural resource management practices.”

**Guest of Honour**  
**Smt. Kanchan Devi, IFS,**  
**Director General, ICFRE, Dehradun**



“Agriculture and forestry are vital to the livelihoods of Northeast India, while land degradation remains a major concern across the country, including the northeastern region. Successful initiatives, such as the Jal Sahelis in Bundelkhand, Uttar Pradesh, which have contributed to groundwater recharge, highlight the urgent need for scientifically driven solutions for sustainable natural resource management.”



## Chief Guest

### Shri Lalthansanga, Hon'ble Minister, EF&CC Department, Government of Mizoram



“ I congratulate the Centre of Excellence on Sustainable Land Management, ICFRE, Dehradun, and the ICFRE–Bamboo and Rattan Centre, Aizawl, for organizing this important training programme in Mizoram for stakeholders from the northeastern states. Such initiatives should be designed to yield tangible societal outcomes, with a strong emphasis on adopting sustainable natural resource management for development in sectors such as agroforestry, organic farming, horticulture, and forestry in Northeast India. ”

## Glimpses of Day 1



Figure 1: A-H: Glimpses of the Inaugural Session



# Glimpses of Day 2



Figure 2: A-H: Glimpses of Field visit



## Glimpses of Day 3



Figure 3: A-D: Glimpses of Technical Session; E-H: Valedictory Session

## Print Media Coverage

Date: 26.11.2025

Newspaper: VIRTHLI, Aizawl

### Ram Leilung hausakna venhimna Training

Nithum chhung awh tur, Ram leilung hausakna leh a awmsa venghim chung a eizawnna kawng in kawh hmuh na tur training, Aijal Club ah ICFRE- Bamboo and Rattan Centre buatsaihin nimin khan tan a ni. He training ah hian Northeast state dang Manipur, Meghalaya leh Tripura atang a sawmbik te, Mizoram Sorkar hmuai



atangin Agriculture Dept, Bamboo Development Agency, AH &

Vety Dept, Soil and Conservation Dept, Directorate of Ayush, State Medicinal Plant Board, Sericulture Dept, Horticulture Dept atangin Group A officers te leh, Research Scholars, MZU leh NGO atangin Centre for Environment Protection leh Clover Organic Pvt. Ltd a tangin sawmbik te an tel a ni. He hun hi Minister zahawm tak Pu Lalthansanga, Hon'ble Minister, EF&CC chuan khuallian niin a hman pui a. Khuallian chuan ramngaw leilung hausakna kan tih chereu nasat tawh lai hian, a venghim zawng leh ti chereu belh lo zawng a eizawnna tur kawng kan dap a pawimawh thu a sawi a. He training ah hian kan ram tan a thil tha paw chhuak thei ngei tur a thiamna hawn theuh turin kalkhawmte a chah a ni. Pi Arti Chaudhary, IFS, CCF, EF&CC Dept, Govt. of Mizoram chu he hunah hian khual zahawm niin, hetiang a training huap zau tak buatsaih a ni hi a lawmawm a tih thu sawi a. Kan ram leilung chereu zel tur veng tur hian Sorkar leh mipuite thawh ho na a that a pawimawh thu a sawi. Pu Sandeep Yadav, Scientist-D & Head, ICFRE-BRC in kalkhawmte lawman thu sawiin, Course Director, Dr. Hans Raj, Scientist-E, ICFRE-CoE(SLM) in training chungchang sawifiah na hun a hmang a. Indian Council of Forestry, Research and Education (ICFRE) Director General, Pi Kanchan Devi, IFS leh Dr. Nitin Kulkarni, Director, ICFRE-RFRI te chuan he training khuhhawmna hi online in an hman pui bawk. Technical session ah hian, mithiam hrang hrang ten thupui thlan bik hmang in zirtina an pe a ni.



## Print Media Coverage

Date: 26.11.2025

Newspaper: NEWSLINK, Aizawl

### 3-day natural resource training begins in Aizawl

Staff Reporter

**Aizawl, Nov 25:** A three-day long training programme focusing on integrated natural resource management strategies for livelihood security in Northeast India commenced today at the Aijal Club. The event was organised by the ICFRE-Bamboo and Rattan Centre (ICFRE-BRC) Bethlehem Vengthlang, Aizawl.

The training featured invited participants from other North Eastern states (Manipur, Meghalaya, and Tripura), along with Group 'A' Officers from numerous Mizoram Government departments, including Agriculture, Horticulture, AH & Vety, Soil and Conservation, Ayush, Sericulture, and the State Medicinal Plant Board. Additionally, Research



Scholars from Mizoram University (MZU) and representatives from NGOs like the Centre for Environment Protection and Clover Organic Pvt. Ltd. participated.

Inauguration was graced by the Minister for Environment, Forests & Climate Change (EF&CC), Lal-thansanga, in his speech, the Minister emphasised the critical need to identify sustainable livelihood av-

enues that promote conservation and halt further degradation of the region's severely depleted forest and land resources. He urged participants to leverage the training to acquire knowledge beneficial to the state.

Arti Chaudhary, IFS, CCF, EF&CC Department, Govt. of Mizoram, served as the Guest of Honour. She commended the organization of this extensive training and

highlighted the necessity of strong collaboration between the government, the NGO's and the public to protect the state's natural environment from ongoing deterioration.

Sandeep Yadav, Scientist-D & Head, ICFRE-BRC, delivered the welcome address. Dr. Hans Raj, Scientist-E, ICFRE-CoE(SLM) and Course Director, provided an overview of the training curriculum. The function was also attended virtually by Kanchan Devi, IFS, Director General, ICFRE, and Dr. Nitin Kulkarni, Director, ICFRE-RFRI.

The programme features a Technical Session where various subject matter experts will deliver specialised instruction on predetermined topics.

## Digital Media Coverage

Date: 25.11.2025

Media Channel: ZONET NEWS, Aizawl

Click to view the video on YouTube (opens in browser)



## Digital Media Coverage

Date: 26.11.2025

Media Channel: LPS NEWS, Aizawl

Click to view the video on YouTube (opens in browser)

